माननीय अध्यक्ष : माननीय प्रधान मंत्री जी ।

प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी) : माननीय अध्यक्ष जी, 17वीं लोक सभा के गठन के बाद राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए और धन्यवाद करने के लिए मैं उपस्थित हुआ हूं ।

महोदय, राष्ट्रपति जी ने अपने भाषण में हम भारत को कहां ले जाना चाहते हैं, कैसे ले जाना चाहते हैं, भारत के सामान्य मानवी की आशा-आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए किन चीज़ों को प्राथमिकता देना चाहते हैं, किन चीज़ों पर बल देना चाहते हैं, उसका एक खाका खींचने का प्रयास किया है ।

राष्ट्रपति जी का अभिभाषण, देश के सामान्य मानवी ने जिस आशा, आकांक्षाओं के साथ इस सदन में हम सबको भेजा है, उसकी एक प्रकार से प्रतिध्वनि है और इसलिए इस अभिभाषण का धन्यवाद एक प्रकार से देश के कोटि-कोटि जनों का भी धन्यवाद है । एक सशक्त, सुरक्षित, समृद्ध, समावेशी, ऐसे राष्ट्र का सपना हमारे देश के अनेक महापुरुषों ने देखा है । उसको पूर्ण करने के लिए संकल्पबद्ध होकर अधिक गति, अधिक तीव्रता के साथ हम सब को मिल-जुलकर आगे बढ़ना, यह समय की मांग है, देश की अपेक्षा है और आज के वैश्विक वातावरण में यह अवसर भारत को खोना नहीं चाहिए । उस मिजाज़ के साथ हम आगे बढ़ें, हम सभी मिलकर आगे बढ़ें । मैं समझता हूं देश की आकांक्षाओं को पूर्ण करने में आने वाली हर चुनौती, हर बाधा को हम पार कर सकते हैं ।

इस चर्चा में करीब 60 आदरणीय सांसदों ने हिस्सा लिया । जो पहली बार आए हैं, उन्होंने बहुत ही अच्छे ढंग से अपनी बात को रखने का प्रयास किया, चर्चा को सार्थक बनाने का प्रयास किया । जो अनुभवी हैं, उन्होंने भी अपने-अपने तरीके से इस चर्चा को आगे बढ़ाया । श्रीमान् अधीर रंजन चौधरी जी, श्री टी.आर. बालू जी, श्री दयानिधि मारन जी, श्रीमान् सौगत राय जी, जयदेव जी, सुश्री महुआ मोइत्रा, पी.वी. मिधुन रेड्डी जी, विनायक बी. राउत, राजीव रंजन सिंह जी, पिनाकी मिश्रा, कुंवर दानिश अली, श्री नामा नागेश्वर राव, डॉ. अमोल रामसिंह, मोहम्मद

आजम खां, असादुद्दीन ओवैसी, श्री प्रताप चन्द्र सारंगी, डॉ. हिना गावित समेत अन्य सभी का इस चर्चा को सार्थक बनाने के लिए मैं हृदय से बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं । यह बात सही है कि हम सब मनुष्य हैं । तीस दिन में जो मन पर छाप रहती है, प्रभाव रहता है, निकलना जरा कठिन होता है और उसके कारण चुनावी भाषणों का भी थोड़ा-बहुत असर नजर आता था । वही बातें यहां भी सुनने को मिल रहीं थीं । लेकिन शायद वह प्रकृति का नियम है और इसलिए अध्यक्ष जी मैं आपको भी इस गरिमापूर्ण पद पर, जिस प्रकार से आपने इस सदन का संचालन किया, पूरी चर्चा को सबको विश्वास में लेते हुए आगे बढ़ाया, आप इस पद पर नए हैं और जब आप नए होते हैं तो कुछ लोगों का मन भी करता है कि जरा आपकी शुरू में ही परेशानी बढ़ा दें । लेकिन इन सब स्थितियों के बावजूद भी आपने बहुत ही बढ़िया ढंग से इन सारी चीज़ों को चलाया, इसके लिए भी मैं आपको बहुत-बहुत बधाई देता हूं और मैं सदन को भी नए स्पीकर महोदय को सहयोग देने के लिए भी उनका आभार व्यक्त करता हूं ।

माननीय अध्यक्ष जी, कई दशकों के बाद देश ने एक मजबूत जनादेश दिया है । एक सरकार को दोबारा चुनकर लाए हैं । पहले से अधिक शक्ति देकर लाए हैं । आज के सामान्य वातावरण में भारत जैसी वाइब्रेन्ट डेमोक्रेसी में हर भारतीय के लिए गौरव करने का विषय है कि हमारा मतदाता कितना जागरूक है । वह अपने से ज्यादा अपने देश को कितना प्यार करता है, अपने से ज्यादा अपने देश के लिए किस प्रकार से वह निर्णय करता है, इस चुनाव में साफ-साफ नज़र आया है और इसलिए देश के मतदाता अनेक-अनेक अभिनन्दन के अधिकारी हैं । मुझे इस बात का संतोष है, हमारी पूरी टीम को संतोष है कि 2014 में जबकि हम पूरी तरह नए थे, देश के लिए भी हम अपरिचित थे, लेकिन उन स्थितियों से बाहर निकलने के लिए देश ने एक प्रयोग के रूप में कि 'चलो भई, जो भी है, इनसे तो बचेंगे' सोचकर हमें मौका दिया । लेकिन, 2019 का जनादेश पूरी तरह कसौटी पर कसने के बाद हर तराज़ू पर तोले जाने के बाद पल-पल को जनता-जनार्दन ने बड़ी बारीकी से देखा है, परखा है, जाँचा है और उसी आधार पर समझा है । और तब जाकर दोबारा बिठाया है । यह लोकतंत्र की बहुत बड़ी ताकत है । चाहे जीतने वाला हो, चाहे हारने

वाला हो, चाहे मैदान में था, या मैदान के बाहर था, हर किसी के लिए इस विजय को सरकार के 5 साल के कठोर परिश्रम, सरकार के 5 साल का जनता-जनार्दन की सुख-सुविधा के लिए पूर्ण समर्पण, पूर्ण रूप से 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' की नीतियों को लागू करने का सफल प्रयास, उसको लोगों ने एक बार फिर से अपना अनुमोदन देकर देश की सेवा करने के लिए दोबारा बिठाया है ।

माननीय अध्यक्ष जी, एक व्यक्ति के रूप में जीवन में इससे बड़ा कोई संतोष नहीं होता है, जब जनता जनार्दन, जो कि ईश्वर का रूप होती है, वह आपके काम को अनुमोदित करती है । यह सिर्फ चुनाव की जीत और हार, आँकड़े का खेल नहीं है जी, यह जीवन की उन आस्था का खेल है, जहाँ कमिटमेंट क्या होता है, डेडिकेशन क्या होता है, जनता-जर्नादन के लिए जीना, जनता-जनार्दन के लिए जूझना, जनता-जनार्दन के लिए खपना यह क्या होता है, यह 5 साल की अखण्ड एकनिष्ठ अविरत तपस्या का जब फल मिलता है, तो उसका संतोष एक अध्यात्म की अनुभूति कराता है और इसलिए कौन हारा, कौन जीता, इस दायरे में इस चुनाव को देखना मेरी सोच का हिस्सा नहीं हो सकता है । मैं इससे कुछ आगे सोचता हूं । इसलिए मुझे 130 करोड़ देशवासियों के सपने, उनकी आशा, उनकी आकांक्षा, मेरी नज़र में रहती है ।

माननीय अध्यक्ष जी, वर्ष 2014 में जब देश की जनता ने हमें अवसर दिया, मुझे पहली बार सेन्ट्रल हॉल में वक्तव्य देने का मौका मिला था । सहज भाव से मैंने कहा था कि मेरी सरकार गरीबों को समर्पित है । मैं आज उन पांच सालों के कार्यकाल के बाद बड़े संतोष के साथ कह सकता हूं, जो संतोष जनता जनार्दन ने ईवीएम के बटन को दबाकर भी व्यक्त किया है ।

जब चर्चा का प्रारंभ हुआ, पहली बार सदन में आए श्रीमान् प्रताप सांरगी जी ने और आदिवासी समाज से आई हमारी बहन डॉक्टर हिना गावित जी ने जिस प्रकार से विषय को प्रस्तुत किया और जिस बारीकी से चीजों को रखा, मैं समझता हूं कि उसके बाद मैं कुछ भी न बोलूं, तो भी बात पहुंच चुकी है।

माननीय अध्यक्ष जी, हमारे देश के जितने भी महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने सार्वजनिक जीवन में मार्गदर्शन किया है, उन्होंने एक बात हमेशा कही है और वह अंत्योदय की कही है । आखिरी छोर पर बैठे हुए इंसान की भलाई की बात कही है । चाहे पूज्य बापू हों, चाहे बाबासाहेब अंबेडकर हों, चाहे लोहिया जी हों या दीनदयाल जी हों, हर किसी ने इसी बात को कहा है । पिछले पांच सालों के कार्यकाल में हमारे मन में यही भाव रहा कि जिसका कोई नहीं है, उसके लिए सरकार ही सिर्फ होती है । हमने देश आज़ाद होने के बाद एक ऐसा कल्चर जाने अनजाने में स्वीकार कर लिया, या उसको बढ़ाने में बल दे दिया, और मैं शब्द प्रयोग 'हम' करता हूं, मैं किसी पर आरोप नहीं लगाता हूं । हमने जाने अनजाने में एक ऐसा कल्चर प्रसारित किया, जिसमें देश के सामान्य मानवी को अपने हक के लिए व्यवस्थाओं के साथ जूझना पड़ता है, जद्दोजहद करनी पड़ती है, उसको लड़ना पड़ता है । क्या इस आज़ादी के लिए वह निकला था? क्या सामान्य मानवी उसके हक की चीज़ें हैं? सहज रूप से व्यवस्था के तहत जिसका वह हकदार है, वे उसे मिलनी चाहिए कि नहीं मिलनी चाहिए और मिले या न मिले, वह शिकायत करे या न करे, हमने मान लिया था कि यह सब तो ऐसे ही चलता है । मैं जानता हूं कि इन चीजों को बदलने में कितनी मेहनत लगती है । राज्यों को भी ऑन बोर्ड लाने में कितनी तकलीफ होती है । 70 साल की बीमारियों को पांच साल में पूरा करना कठिन होता है, लेकिन मैं इस संतोष के साथ कह सकता हूं कि हमने वह दिशा पकड़ी है, कठिनाइयों के बावजूद भी, हमने उस दिशा को नहीं छोड़ा है । न डायवर्ट न डाइल्यूट । हम उस मकसद से चलते रहे और यह देश दूध का दूध, पानी का पानी भली भांति कर सकता है । उसने शौचालय को सिर्फ चार दीवार नहीं समझा ।

घर में चूल्हा पहुँचा तो सिर्फ खाना ढंग से पका, उतना ही नहीं समझा । उस हर व्यवस्था के पीछे उस मकसद को उसने समझा कि आखिरकर यह क्यों कर रही है सरकार । मैंने तो चूल्हा माँगा नहीं था, मैंने तो बिजली के कनेक्शन के बिना ज़िन्दगी गुजार दी थी, वह क्यों कर रहे हैं? पहले प्रश्न उठाता था कि क्यों नहीं करते हैं, आज उसके मन में यह विश्वास पैदा हुआ है कि यह क्यों करते हैं? क्यों नहीं करते हैं से लेकर क्यों करते हैं, यह यात्रा बड़ी लम्बी थी, लेकिन उसमें

विश्वास भरा हुआ था, जिसने अपनेपन को जग-उजागर कर दिया और जो आज देश में एक नए सामर्थ्य की अनुभूति करवा रहा है और उसी को आगे बढ़ाने की दिशा में हम प्रयास कर रहे हैं।

यह बात सही है कि जिस प्रकार से एक वेल्फेयर स्टेट के रूप में देश गरीबी से जब जूझ रहा है तो उनको उन योजनाओं के तहत ईज ऑफ लिविंग के लिए जो भी एक सामान्य मानवी की आवश्यकता होती है, उसकी पूर्ति हो, लेकिन देश आगे भी बढ़ना चाहिए । गरीबों का कल्याण हो, गरीबों का उत्थान हो, गरीबों का एम्पावरमेंट हो, लेकिन साथ-साथ आधुनिक भारत को भी मजबूती से आगे बढ़ाना चाहिए । ऐसी पटरी पर विकास की धारा चलनी चाहिए, जहाँ एक तरफ वेल्फेयर को लेकर ध्यान केन्द्रित हो, सामान्य मानवी की ज़िन्दगी की आवश्यकताओं की पूर्ति पर भरपूर प्रयास हो और दूसरी तरफ वह पटरी हो, जो आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण करे । देश को आधुनिक बनाने के लिए, योजनाओं को लागू करें और हमने उन दोनों तरफ बल दिया । हाइवेज हों या आई-वेज हों, वाटरवेज हों, रेल हो या रोड हो, उड़ान योजना से हवाई जहाज की व्यवस्था हो, स्टार्ट-अप हो, इनोवेशन हो, टिंकरिंग लैब से लेकर चन्द्रयान तक की यात्रा की कल्पना हो, इन सारी चीज़ों को एक आधुनिक भारत, अनेक चुनौतियों से लड़ने के लिए हमें आगे बढ़ना है।

यहाँ बहुत अच्छी बातें बताई गईं, कुछ तीखी बातें भी बताई गईं । ज़्यादातर चुनावी सभाओं की छाया वाली बातें भी बताई गईं । हर एक का अपना-अपना एक एजेंडा होता है, उसके लिए मुझे कुछ कहना भी नहीं है । लेकिन यहाँ कहा गया कि हमारी ऊँचाई को कोई कम नहीं कर सकता है । ऐसी गलती हम नहीं कर सकते । हम किसी की लकीर छोटी करने में अपना समय बर्बाद नहीं करते हैं, हम हमारी लकीर लम्बी करने के लिए ज़िन्दगी खपा देते हैं । आपकी ऊँचाई आपको मुबारक हो, क्योंकि आप इतने ऊँचे चले गए हैं, इतने ऊँचे चले गए हैं कि जमीन दिखना बन्द हो गया है । आप इतने ऊँचे चले गए हैं कि आप जड़ों से उखड़ चुके हैं । आप इतने ऊँचे चले गए हैं कि जो जमीन पर है, वह आपको तुच्छ दिखता है और इसलिए आपका और ऊँचा होना, मेरे लिए अत्यन्त संतोष और आनन्द है । मेरी कामना है कि आप और ऊँचे बढ़ें । हमारी आपसे

ऊँचाई के संबंध में कोई स्पर्धा ही नहीं है, क्योंकि हमारा सपना ऊँचा होने का है ही नहीं । हमारा सपना जड़ों से जुड़ने का है । हमारा सपना जड़ों की गहराई से जुड़ने का है, हमारा सपना, हमारा रास्ता जड़ों से ही ताकत पाकर देश को और मजबूती देना, यह हमारा रास्ता है । इसलिए जिस स्पर्धा में हम नहीं हैं, उस स्पर्धा में हम तो आपको शुभकामनाएँ ही देते रहेंगे, और ऊँचे, और ऊँचे, और ऊँचे जाइए।

मैं देख रहा हूँ कि बार-बार चर्चा आती है, लेकिन thus far and no further एक बार पूरा हो जाना चाहिए । यह बात सही है कि कुछ लोगों को कुछ लोगों के लिए लगाव होता है । अगर उनका नाम नहीं आता है, तो उन्हें परेशानी हो जाती है । नाम न आने से भी जैसे अपमानित कर दिया, उन्हें ऐसा महसूस होता है । ऐसा हो सकता है । ऐसा होना नहीं चाहिए, लेकिन होता है । मैं चुनौती देता हूँ कि 2004 से पहले इस देश में अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार थी । 2004 से 2014 तक शासन में बैठे हुए लोगों ने अधिकृत कार्यक्रम में एक बार भी अटल जी की सरकार की तारीफ की हो, उनके अच्छे कामों का उल्लेख किया हो तो जरूर इस पटल पर रखें । इतना ही नहीं, अटल जी छोड़िए, नरसिम्हा राव की सरकार की तारीफ की हो, उसे रखो । इतना ही नहीं, अभी के भाषण में भी एक बार डॉ. मनमोहन सिंह जी का नाम बोले होते तो मुझे हर्ष होता । वे बड़े-बड़े लोग थे, मैं उनकी बराबरी में कुछ नहीं हूँ, मैं तो एक सामान्य व्यक्ति हूँ, लेकिन लाल किले पर से शायद, वेरीफाई करना चाहिए, शायद मैं पहला प्रधान मंत्री हूँ, जिसने दो बार यह कहा है कि आजादी से लेकर अब तक केन्द्र और राज्य की जितनी भी सरकारें हुई हैं सबका देश को आगे ले जाने में योगदान है । इस सदन में भी अनेक बार मैं कह चुका हूँ, आज दोबारा कहता हूँ ।

हम वो लोग नहीं हैं और इसलिए बार-बार यह कहना, हाँ उनकी अपेक्षा है कि वही नाम आए, वह एक अलग बात है । मैं एक उदाहरण देता हूँ कि हम लोगों का कैरेक्टर क्या है, हम लोगों का चरित्र, हमारी सोच क्या है? मैं जानकारी के लिए उदाहरण देता हूँ, तभी आपको समझने में सुविधा होगी । सबको नहीं होती है । गुजरात में मुझे लंबे अरसे तक मुख्य मंत्री के नाते काम करने का अवसर मिला । गुजरात के 50 साल हुए थे, “गोल्डन जुबली ईयर” था । उस “गोल्डन जुबली

ईयर" के अनेक कार्यक्रम किए, सबको साथ लेकर किए, लेकिन एक महत्वपूर्ण काम मैं आज यहाँ बताना चाहता हूँ । मैंने सरकार को सूचना की कि 50 साल में जो राज्यपाल महोदय के भाषण हुए हैं, उन भाषणों को कम्पाइल करके उनका एक ग्रंथ निकाला जाए और वह हिस्ट्री का रिकॉर्ड बनना चाहिए । अब मुझे बताएं कि 50 साल तक गवर्नर का भाषण मतलब किसका भाषण था? उस समय की सरकारों की एक प्रकार से वाहवाही कहो या उस समय की सरकारों के काम का उसमें लेखा-जोखा था । वे हमारे दल की सरकारें नहीं थीं, लेकिन यह हमारी सोच का हिस्सा है कि शासन चलाने की व्यवस्था में जो भी है, देश को आगे ले जाने में जिसकी भूमिका है और वह पूर्णतया सकारात्मक था । किसी अखबार के एडिटोरियल का कम्पाइलेशन नहीं छापा था, गवर्नर के भाषणों का छापा है । वह आज भी उपलब्ध है, उसे जाकर देखें । इसलिए यह कहना कि देश में पहले जो काम हुए हैं, उन्हें हम बिल्कुल गिनते ही नहीं हैं और बार-बार हमें सुनाते रहना, यह सुनाने का उन्हीं को हक है, जिन्होंने कभी किसी को स्वीकार किया हो । वरना देश को लगता था कि उनके कार्यकाल में नरसिम्हा राव जी को भारत रत्न मिलता, उनके कार्यकाल में पहली टर्म के बाद डॉ. मनमोहन सिंह जी को भारत रत्न मिलता, लेकिन परिवार के बाहर के व्यक्ति को कुछ नहीं मिलता है जी । यह हम हैं, हमारी सोच है।

प्रणव दा किस दल से थे, किस पार्टी के लिए उन्होंने जीवन खपाया, उसके आधार पर हम निर्णय नहीं करते हैं, उनका देश के लिए योगदान था, भारत रत्न का निर्णय हम कर सकते हैं ।

यह कहने के बाद मुझे अच्छा नहीं लग रहा है, मुझे आनन्द नहीं हो रहा है, लेकिन बार-बार हमें सुनाया जाता है तो फिर thus far and no further. आज मैं इस चीज़ को रिकॉर्ड पर रखना चाहता हूं कि कृपा करके बार-बार ऐसा मत बोलिए । हम किसी के योगदान को नकारते नहीं हैं । जब हम कहते हैं कि सवा सौ करोड़ देशवासियों ने देश को आगे बढ़ाया है तो सवा सौ करोड़ देशवासियों में सब कोई आते हैं । इसलिए कृपा करके हम चर्चाओं को इतना छोटा न बना दें।

माननीय अध्यक्ष जी, कल तो बड़े नारे बुलवा लिए गए, किसने किया, किसने किया, किसने किया! आज 25 जून है साहब! बहुत लोगों को जानकारी भी नहीं है कि 25 जून क्या है, अगल-

बगल में पूछना पड़ता है । 25 जून की वो रात - देश की आत्मा को कुचल दिया गया था । भारत में लोकतंत्र संविधान के पन्नों से पैदा नहीं हुआ है, भारत में लोकतंत्र सदियों से हमारी आत्मा है । इस आत्मा को कुचल दिया गया था । देश के मीडिया को दबोच दिया गया था । देश के महापुरुषों को जेल की सलाखों के पीछे बंद कर दिया गया था । पूरे हिन्दुस्तान को जेलखाना बना दिया गया था और सिर्फ, किसी की सत्ता चली न जाए, इसलिए । न्यायपालिका का जजमेंट था । न्यायपालिका का अनादर कैसे होता है, उसका वह जीता-जागता उदाहरण है । आज 25 जून को हमें लोकतंत्र के प्रति फिर से एक बार अपने समर्पण, अपने संकल्प को और ताकत के साथ समर्पित करना होगा । संविधान की बातें बताना और संविधान को कुचलने का पाप करना, इन चीज़ों को कोई भूल नहीं सकता है । उस समय जो-जो भी इस पाप के भागीदार थे, यह दाग कभी मिटने वाला नहीं है । इस दाग को बार-बार स्मरण करने की भी जरूरत है, ताकि देश में फिर कोई ऐसा पैदा न हो, जिसको इस पाप के रास्ते पर जाने की इच्छा हो जाए । इसलिए इसे याद करना जरूरी है, किसी को भला-बुरा कहने के लिए नहीं । लोकतंत्र के प्रति आस्था का महत्व क्या है, यह समझाने के लिए भी, लोकतंत्र पर किस प्रकार से प्रहार हुआ था, यह स्मरण कराना जरूरी होता है, किसी को बुरा-भला कहने के लिए नहीं होता है । उस समय जबकि मीडिया पर ताले लग चुके थे, हर किसी को लगता था कि आज शाम को पुलिस आएगी, पकड़ लेगी, ऐसे वातावरण में मेरे देश के नागरिकों की सामर्थ्य देखिए, इनकी ताकत देखिए । जाति, पंथ, सम्प्रदाय, सबसे ऊपर उठ करके देश ने उस समय चुनाव में नतीजा दिया था, लोकतंत्र के लिए वोट किया था और लोकतंत्र को पुन: प्रस्थापित किया था । यह मेरे देश के मतदाताओं की ताकत है । इस बार फिर एक बार देश ने जाति, पंथ, सम्प्रदाय, भाषा, सबसे परे उठ करके सिर्फ और सिर्फ देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए मतदान किया है।

माननीय अध्यक्ष जी, राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में दो महत्वपूर्ण अवसरों का उल्लेख किया है । एक 'गांधी 150' और दूसरा 'आज़ादी 75' व्यक्ति का जीवन हो, परिवार का जीवन हो, समाज का जीवन हो, कुछ तारीखें होती हैं जो नया जज़्बा पैदा करती है, जीवन को

प्राणवान बनाने का अवसर बन जाती है, संकल्पों को पूर्ण करने के लिए समपर्ण के भाव से जोड़ देती हैं । भारत के जीवन में भी आज हमारे पास पूज्य बापू से बड़ी कोई प्रेरणा नहीं है । आज हमारे पास आज़ादी के लिए मर मिटने वाले वीरों से बड़ी कोई यादें नहीं हैं । यह अवसर खोना नहीं चाहिए। देश की आज़ादी के लिए जिन्होंने अपना जीवन खपा दिया, उनका पुण्य स्मरण करते हुए, जिन्होंने यातानाएं झेली, जिन्होंने अपनी जवानी माँ भारती के लिए न्योछावर कर दी, उनका पुण्य स्मरण करते हुए और देश में आज़ादी के लिए जन आंदोलन का सफलतापूर्वक नेतृत्व करने वाले पूज्य बापू का स्मरण करते हुए, इन तारीखों का एक अवसर बना कर के हम देश में फिर से एक बार स्पिरिट पैदा कर सकते हैं । यह सरकार का एजेंडा नहीं हो सकता है, किसी दल का एजेंडा नहीं हो सकता है, यह पूरे देश का एजेंडा होता है । इसमें दल नहीं होते हैं, सिर्फ और सिर्फ देश होता है । राष्ट्रपति जी ने इस बात को कहा है । हमारे लिए संकल्प की घड़ी है । चुनाव के मैदान में तू तू मैं मैं जो करना है, कर लीजिए, लेकिन एक अवसर है, इसको हम पकड़ें । आज़ादी के पहले देश के लिए मरने का मिजाज था, आज 'आज़ादी 75' पर देश के लिए जीने का मिजाज़ पैदा करने का हमें अवसर मिला है।

मैं इस सदन में सभी जनप्रतिनिधियों से आग्रह करता हूं, मैं देश के सभी सार्वजनिक जीवन का नेतृत्व करने वाले लोगों से आग्रह करता हूं कि राष्ट्रपति जी ने हमें जो आदेश दिया है, हम से जो अपेक्षा की है, उस अपेक्षा को पूर्ण करने के लिए हम आगे आए और इन दो महत्वपूर्ण अवसरों को नए भारत के निर्माण के लिए, जन सामान्य को जोड़ने के लिए हम किस प्रकार से आगे ला सकते हैं, हम प्रयास करें ।

हिन्दुस्तान की गुलामी का काल खंड लंबा रहा, लेकिन उस गुलामी के काल खंड में कोई भी काल ऐसा नहीं था कि किसी न किसी कोने में से आज़ादी की आवाज़ न उठी हो, त्याग-बलिदान की परंपरा न चली हो । 1857 में एक संगठित रूप प्रकट हुआ, लेकिन महात्मा गांधी का एक बहुत बड़ा योगदान था । उन्होंने देश के सामान्य मानवी को आज़ादी का सिपाही बना दिया । अगर वह झाड़ू लगाता है तो भी आजादी के लिए, वह बच्चों को शिक्षा देता है तो भी आज़ादी के

लिए, वह खादी का वस्त्र पहनता है तो भी आज़ादी के लिए, यह पूज्य बापू ने पूरे हिन्दुस्तान में माहौल बना दिया । 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में देश का जन-जन जुड़ गया । 1942-47 आज़ादी की जंग का एक बहुत बड़ा महत्वपूर्ण टर्निंग प्वाइंट है । क्या हम गांधी -150 और आज़ादी -75 को उस 1942 की स्पिरिट के साथ देश को संकटों से मुक्ति दिलाना, देश को समस्याओं से मुक्ति दिलाना, अधिकार से ऊपर उठकर कर्त्तव्य पर बल देना, जिम्मेवारियों को निभाने के लिए देश को प्रेरित करना, क्या हम इसके लिए आगे आ सकते हैं? मैं मानता हूं कि राष्ट्रपति जी ने इस विषय को बहुत महत्वपूर्ण तरीके से हमारे सामने रखा है । लोगों को आश्चर्य होता था, जब आज़ादी की मांग हो रही थी, मजाक भी उड़ाया जाता था कि कैसे चलाओगे, क्या चलाओगे, लेकिन आज़ादी के दीवानों के अंदर एक ललक थी।

आजादी के लिए मरने वालों का एक मिजाज था, आजाद भारत के लिए जीने वालों का मिजाज पैदा करना, इस नेतृत्व में क्षमता है । मैं चारों तरफ हाथ घुमा करके कह रहा हूं, मैं सिर्फ मेरे लिए नहीं कह रहा हूं, न मैं इस तरफ कह रहा हूं । हम सब मिल कर इस बात को करें । स्वभावत: तत्कालीनता में मेरी सोच का दायरा नहीं होता है, छोटा सोचना मुझे पसन्द नहीं है । इसलिए मुझे कभी लगता है कि सवा सौ करोड़ देशवासियों के सपनों को अगर जीना है, तो फिर छोटा सोचने का मुझे अधिकार भी नहीं है।

“जब हौसला बना लिया ऊंची उड़ान का,
फिर देखना फिजूल है कद आसमान का।”

इस मिजाज के साथ हम आगे के लिए एक नए हौसले, नए बुलंद विचारों के साथ आए । इस सरकार को अभी तो तीन सप्ताह हुए हैं, लेकिन हमारे यहां कहावत है कि पुत्र के लक्षण पालने में दिख जाते हैं । किस प्रकार से तीन सप्ताह में, हमें भी मन करता था कि कहीं जाएं, मालाएं पहनें, जयकारा करें, लेकिन हमने वह रास्ता नहीं चुना । हमें भी लगता था कि इतने चुनाव, छ: महीने से दौड़ रहे थे, चलो कुछ दिन हम भी आराम कर लें, लेकिन वह रास्ता हमें पसन्द नहीं है । हमारा रास्ता वह नहीं है । हम तो देश के लिए जीने के लिए आए हैं । तीन सप्ताह के भीतर-भीतर कितने

महत्वपूर्ण निर्णय इस सरकार ने लिए । एक गतिशील, समय का पल-पल उपयोग करते हुए देश को कैसे आगे लाया जाना - छोटे किसान हों, छोटे दुकानदार हों, खेत मजदूर हों, उनको साठ साल के बाद पेंशन वाला निर्णय कर लिया । पीएम किसान समृद्धि योजना, हमने वादा किया था कि सभी किसानों को उसके दायरे में लाकर उसका लाभ दिया जाएगा, दे दिया गया । सेना के जवानों के बच्चों को जो स्कॉलरशिप मिलती है, उसमें बढ़ोतरी की, लेकिन साथ-साथ समाज की सुरक्षा में लगे हुए हमारे पुलिस के जवान हैं, उनके बच्चों को भी वह बेनेफिट मिले, इसका एक बहुत बड़ा निर्णय किया।

मानव अधिकारों से जुड़े बहुत महत्वपूर्ण कानून इस संसद के अंदर हमने लाने के लिए जो भी आवश्यक तैयारियां थीं, वे पूरी कर लीं । 2022 के सपनों को पूरा करना, मुख्य मंत्रियों की मीटिंग बुलाना, ऑल पार्टी की मीटिंग बुलाना, ऑल पार्टी प्रेसीडेंट्स की मीटिंग बुलाना, हर चीज को, जितना भी तीन सप्ताह के भीतर-भीतर, सबको साथ लेकर चलने के लिए जितने भी काम हो सकते हैं, एक के बाद एक कामों को उठाया । मैं पूरी गिनती करूंगा तो शायद डेली के तीन काम निकल आएंगे ।

माननीय अध्यक्ष जी, राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में हमने उल्लेख किया है । ऐसा नहीं है कि पहले की सरकारों ने कोई काम नहीं किया है । यहां चर्चा हो रही थी कि यह डैम बना, वह डैम बना, ढिकना डैम बना, फलाना डैम बना, काफी कुछ चर्चा हुई । अच्छा होता कि बाबा साहब अम्बेडकर के नाम का उल्लेख होता । हिंदुस्तान में पानी के सम्बन्ध में जितने भी इनीशिएटिव लिए गए थे, वह सारा काम बाबा साहब अंबेडकर के जिम्मे है । लेकिन, एक सीमा के बाहर, बहुत ऊंचाई पर जाने के बाद दिखता नहीं है । बाबा साहब ने सेंट्रल वाटरवेज़, इरीगेशन, नेवीगेशन और बाबा साहब पानी के सम्बन्ध में कहते थे, मैं समझता हूं कि आज के लिए बाबा साहब का यह आदेश हम सब के लिए उपयोगी है । वे कहते थे, 'Man suffers more from lack of water than from excess of it.' मैं समझता हूं कि बाबा साहब ने जो चिंता व्यक्त की थी, उस चिंता को समझते हुए हमें कुछ न कुछ सोचना पड़ेगा ।

यहां पर अनेक डैम्स की बात हुई, उसमें सरदार सरोवर डैम की भी बात हुई । माननीय अध्यक्ष जी, मैं थोड़ा समय लेना चाहता हूं, कभी क्या होता है कि ऐसे भ्रम फैलाए जाते हैं । इनका ईको सिस्टम ऐसा है कि उसी को आगे बढ़ाने में मजा आता है । सत्य कभी उजागर नहीं करने देते । मेरे आज बोलने के बाद भी सत्य आएगा, ऐसी कोई गारंटी नहीं है, यहीं रह जाएगा, लेकिन फिर भी मुझे अपने कर्तव्य पालन का संतोष जरूर होगा । सरदार सरोवर डैम - 1961 में पंडित नेहरू जी ने इसकी नींव रखी थी । सरदार वल्लभ भाई पटेल का वह सपना था, लेकिन नींव रखी गई 1961 में । दशकों तक मंजूरियां नहीं, पत्थर तो गाड़ दिया गया बिना मंजूरियां, और उस समय 6000 करोड़ रुपये का प्रोजेक्ट था । वह पूरा होते-होते 60,000-70,000 करोड़ रुपये पर पहुंच गया । देश की क्या सेवा की आप देखिए? इतना ही नहीं, यूपीए सरकार के समय भी उसको रोकने का प्रयास हुआ । 1986-87 में 6,000 करोड़ का खर्चा 62,000 करोड़ पहुंचा । हमने आकर इसे पूरा किया । मुझे अनशन पर बैठना पड़ा था, यूपीए सरकार के खिलाफ मुझे अनशन पर बैठना पड़ा था, मुख्य मंत्री को, क्योंकि सारी चीजें रोक दी गई थीं, तब जाकर यह योजना हुई । अभी मैंने इसे पूरा किया, प्रधान मंत्री बनने के पहले 15 दिन में मैंने सारी रुकावटें हटाने का काम किया था । आज करीब चार करोड़ लोगों को पानी मिल रहा है । सात महानगरों को, करीब 127 नगर पालिकाओं को और 9,000 गांवों को पीने का शुद्ध पानी पहुंच रहा है ।

पानी की तकलीफ क्या होती है, राजस्थान और गुजरात के लोग ज्यादा जानते हैं, इसलिए इस बार हमने जल शक्ति मंत्रालय अलग से बनाया । जल संकट को हमें गंभीरता से लेना होगा । इस सीज़न में भी हम जितना बल जल संचय पर दें, हमें देना चाहिए । मेरी सभी आदरणीय सांसदों से प्रार्थना है, सभी एनजीओज़ से प्रार्थना है कि हम देश में पानी का महात्म्य बढ़ाने में किस प्रकार से योगदान करें और सरकारी दायरे से बाहर होकर करें । पानी बचाना है । इस काम को करके हम सामान्य मानवी की जिंदगी को बचाने में मदद कर सकते हैं । पानी का संकट, दो लोगों को सबसे ज्यादा संकट पैदा करता है । गरीब को और विशेषकर हमारी माताओं और बहनों को । हमारे समाजवादी मित्रों का क्या हुआ, मुझे मालूम नहीं है, लेकिन लोहिया जी बहुत आग्रह से कहते थे कि

इस देश की महिलाओं को दो समस्याएं हैं – पानी और पाखाना । लोहिया जी लगातार कहते थे कि इन समस्याओं से माताओं और बहनों को मुक्त करो । पाखाने का संकट था, शौचालय बनाकर माताओं और बहनों को इज्जत देने का लोहिया जी का सपना पूरा करने के लिए हमने जी जान से काम किया, और अब पानी पर ही इतना बल, और हर घर को जल - इस मंत्र को लेकर आगे बढ़ना है । मैं जानता हूं कि यह कठिन काम है, बड़े काम हैं, हो सकता है कोई इसे तराजू में तोलकर हमें फेल भी कर देगा कि मोदी, तुम्हें 100 में से 70 मार्क्स नहीं मिलेंगे, 50 ही मिलेंगे । जो भी होगा, लेकिन किसी को तो इसे हाथ लगाना पड़ेगा । हमने लगाया है, जल शक्ति मंत्रालय की बात कही है।

जल संचय के साथ और दूसरी जिम्मेदारी जल सिंचन है । दुनिया में प्रूवन है कि शुगरकेन की खेती में माइक्रो इरीगेशन फायदा करता है, लेकिन अभी भी हम फ्लड इरीगेशन कर रहे हैं । किसानों को कौन समझाएगा? माइक्रो इरीगेशन के लिए कौन समझाएगा? सरकार की योजना है, पैसे मिल सकते हैं । पानी बचाने का बहुत बड़ा कारण बन सकता है । ऐसी अनेक चीजें हैं, जिसकी ओर हमें बूंद-बूंद पानी बचाकर देश को कैसे ले जाना है।

एग्रीकल्चर हमारे देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ है । लेकिन पुराने तौर-तरीकों से हमें बाहर आना पड़ेगा । उसकी इनपुट कॉस्ट कम हो, जीरो बजटिंग खेती के जो प्रयोग चल रहे हैं, उसे सफलता मिल रही है । उत्पादन में कोई कटौती नहीं आती है, आज होलिस्टिक हैल्थ केयर के जमाने में क्वालिटी बढ़ रही है ।

हम सब ने राजनीति से परे होकर किसी कार्यक्रम को सरकारी कार्यक्रम माने बिना, यह देश के किसानों की भलाई के लिए है, हमें मिलकर के चलना होगा । हमें किसानों को हैंड होल्डिंग करना पड़ेगा । कॉरपोरेट वर्ल्ड, एग्रीकल्चर सेक्टर में उनका कोई इनवेस्टमेंट ही नहीं है । उनको हमें प्रेरित करना पड़ेगा, उनके लिए कुछ नए नीति नियम बनाने पड़ेगे, वरना कोई ट्रेक्टर बना दे और वह मानता है कि उसने इनवेस्टमेंट कर दिया । प्रत्यक्ष फूड प्रोसेसिंग में आज देश में वेयर हाउसेज बनाने में, कॉल्ड स्टोरेज बनाने में कॉरपोरेट वर्ल्ड का इन्वेस्टमेंट समय की मांग है और

उसको बल देने के लिए हमें काम करना चाहिए । किसानों को FPOs के द्वारा अधिक से अधिक अवसर देकर के उनके लिए बीज से लेकर के बाजार तक की एक व्यवस्था खड़ी हो, जिसके कारण हमारा एग्रीकल्चर सेक्टर में एक्सपोर्ट एक बहुत बड़ा अवसर है, बहुत बड़ी संभावना है । उस क्षेत्र पर बल देना पड़ेगा।

पिछली बार जब 2014 में हमने देखा दाल के भाव, यही इश्यू बन गया था, लेकिन देश के किसान का मिजाज देखिए, जब मैंने सिम्पल रिक्वेस्ट की थी कि आप पल्सेज के लिए आगे आइए और मेरे देश के किसानों ने पल्सेज के लिए इस देश की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए भरपूर काम किया । दलहन का हुआ, अब हमें देश के किसानों को तिलहन के लिए प्रेरित करना चाहिए और देश को एक बूंद भी एडिबल ऑयल इम्पोर्ट न करना पड़े । मैं समझता हूँ देश के किसानों को प्रेरित कर सकते हैं, उसको जोड़ सकते है । इन चीजों को लेकर एक फ्यूचर विजन के साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था किसान की ताकत और देश की रिक्वायरमेंट को हम जोड़कर के काम कर सकते हैं, उसकी दिशा में आगे बढ़ना चाहते हैं ।

माननीय अध्यक्ष जी, यह बात सही है, आलोचना करने के लिए आँकड़ों का हर प्रकार से उपयोग हो सकता है, लेकिन क्या इस देश का सपना कोई किसी के जमाने में कुछ हो तो बड़ा आनन्द का विषय है, लेकिन किसी और के समय हो बहुत बुरा । इसी सदन में, जब हम अर्थव्यवस्था में 11 या 13 नम्बर पर पहुंचे थे तो इतना बड़ा उमंग और उत्साह के साथ बैंच थपथपाई जा रही थी और बहुत बड़े अचीवमेंट के रूप में इस चीज को प्रदर्शित किया गया था । 11 या 13 पर पहुंचे थे । लेकिन जब 6 पर पहुंचे तो ऐसा लग रहा है ऐसा क्यों हो गया भाई । अरे देश वही है जी, हम भी देश के लोग हैं । 11 पर जाने पर आनंद आता है तो 6 पर तो और आना चाहिए। कब तक इतने ऊँचे रहेंगे कि नीचे दिखाई ही नहीं दे और इसलिए 5 ट्रिलियन डॉलर की इकोनोमी हम सबका सपना क्यों नहीं होना चाहिए? हम सब मिलकर देश को 5 ट्रिलियन ले जाएंगे तो किसका नुकसान होने वाला है जी, सबका फायदा होने वाला है । मैं मानता हूँ कि इसके लिए हम सबको मेहनत करनी चाहिए और उस दिशा में आगे जाना चाहिए । एक सपना लेकर के चलना

चाहिए और मुझे विश्वास है हमारे देश में मेक इन इंडिया, मजाक बहुत उड़ा लिया, लेकिन क्या कोई इस बात से इनकार कर सकता है कि देश में मेक इन इंडिया होना चाहिए । माननीय अध्यक्ष जी, मैं किसी की आलोचना करने के लिए अपना समय बर्बाद नहीं करता हूँ, मुझे करने के लिए बहुत काम हैं । लेकिन देश को कुछ चीजों की जानकारी देना जरूरी होता है । हमारे देश के पास करीब दो सौ, सवा दो सौ साल का आयुध बनाने का एक्सपीरियंस है । जब देश आजाद हुआ तब इस देश के पास 18 ऐसी फैक्ट्रीज़ थीं, जो आयुध का निर्माण करती थीं । देश जब आज़ाद हुआ उस समय चाइना आयुध के क्षेत्र में जीरो जगह पर था । उसके पास कोई अनुभव नहीं था न कोई फैक्ट्री थी । आज चाइना दुनिया में अपने डिफेंस की चीजें एक्पोर्ट करता है और हम दुनिया के सबसे बड़े इम्पोर्टर हैं । इस सच्चाई से हमें देश को बाहर लाना है । मेक इन इंडिया का मजाक उड़ाकर क्या करेंगे जी?

18.00 hrs

हो सकता है कि रात को अच्छी नींद आ जाएगी, लेकिन देश का भला नहीं होगा । इसलिए इसे और अच्छा कैसे करें । ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय प्रधान मंत्री जी, एक मिनट रुकिए।

माननीय सदस्यगण, छ: बज गए हैं, अगर आपकी सहमति हो तो सभा की कार्यवाही इस विषय की समाप्ति तक बढ़ा दी जाए।

अनेक माननीय सदस्य: जी, सहमति है।

माननीय अध्यक्ष : माननीय प्रधान मंत्री जी ।

श्री नरेन्द्र मोदी: अध्यक्ष जी, मैं आपका बहुत आभारी हूं और मै सदन का भी आभारी हूं कि आपने मुझे अवसर दिया।

भारत दुनिया की पहली पांच इकोनॉमीज में कैसे प्रवेश करे, भारत में एक्सपोर्ट को कैसे बढ़ावा दें, मेक इन इंडिया को कैसे बढ़ावा दें, स्टार्ट-अप की दुनिया में हमारे नौजवान बहुत कुछ

कर रहे हैं । जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान और अब जय अनुसंधान । हम देश में इन चीजों को कैसे बल दें और हम अपने नौजवानों को रोजगार भी दें ।

हमारे देश में टूरिज्म की बहुत संभावना है, लेकिन हमने ही अपने देश के विषय में इतना हीन भाव पैदा कर दिया है और उसके कारण विश्व के लोगों को हिन्दुस्तान के विषय में आकर्षित करने में गर्व हो, हम कम पड़ गए हैं । स्वच्छता के अभियान ने एक ताकत दी है । हम टूरिज्म पर बल दे सकते हैं, भारत में रोजगार की संभावनाएं बढ़ सकती हैं और दुनिया में भारत की एक नई पहचान हम टूरिज्म के माध्यम से बना सकते हैं । हमें इन चीजों को आगे बढ़ाना है।

आने वाले दिनों में देश को आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर की ओर ले जाना है । 100 लाख करोड़ रुपये भी कम पड़ जाएंगे, देश की इतनी रिक्वायरमेंट है । लेकिन इतने बड़े सपनों को लेकर हमें आगे बढ़ना है और दुनिया भर से हमें जो भी व्यवस्थाएं मिल सकती हैं, उन सारी व्यवस्थाओं का उपयोग करना है । इन सारी चीजों के पीछे हमारा सपना है – नया भारत । हमारा सपना है – आधुनिक भारत और हमारा सपना है – ईज़ ऑफ लिविंग, सामान्य मानवी की जिन्दगी में सुगमता। अपने सपनों को साकार करने के लिए सारे अवसर उसके पास उपलब्ध हों । इस प्रकार की व्यवस्थाओं को विकसित करना और उन्हीं बातों को लेकर, चाहे गांव हो या शहर हो, हरेक के लिए समान अवसर को लेकर हम आगे बढ़ना चाहते हैं ।

आज दुनिया में हम डेमोग्राफिक डिविडेंड की बात करते हैं । देश के पास युवा शक्ति है, लेकिन क्या विश्व की आवश्यकता के अनुसार हम अपने युवाओं को तैयार कर पा रहे हैं**?** हमें बहुत कुछ करने की आवश्यकता है । स्किल डेवलपमेंट की बात हो तो हमें उसके स्केल को भी बढाना पड़ेगा और हर स्कोप को हमें कैप्चर करना पड़ेगा । हम आधुनिकता की दिशा में कैसे ले जाएं, राष्ट्रपति जी ने इस बात को आगे बढ़ाया है । सरकार ने एक मार्केट के लिए 'जेम' की व्यवस्था की है । मैं चाहूंगा कि आपकी भी राज्य सरकारें, जिस दल की हों, वे इस 'जेम' पोर्टल का उपयोग करें । बहुत बड़ी मात्रा में पैसे बच सकते हैं और बहुत से लोगों की मदद हो सकती है और छोटे से

छोटे लोगों द्वारा भी अपना उत्पाद सरकार के दरवाजे तक पहुंचाया जा सकता है । उस दिशा में हमें काम करना चाहिए, यह मेरा आग्रह है।

भ्रष्टाचार के खिलाफ हमारी लड़ाई जारी रहेगी । हमें इसलिए कोसा जा रहा है कि फलाने व्यक्ति को जेल में क्यों नहीं डाला । यह इमरजेन्सी नहीं है कि सरकार किसी को जेल में डाल दे, यह लोकतंत्र है और यह काम न्यायपालिका का है । हम कानून से चलने वाले लोग हैं । अगर किसी को जमानत मिलती है तो एंज्वाय करे, उसमें क्या है । बदले की भावना से काम नहीं होना चाहिए, लेकिन भ्रष्टाचार के खिलाफ हमारी लड़ाई जारी रहेगी । ईश्वर ने हमें जितनी भी बुद्धि और शक्ति दी है, लेकिन जो भी करेंगे, ईमानदारी से करेंगे, किसी के प्रति हीन भाव से नहीं करेंगे । देश ने हमें इतना दिया है कि हमें गलत रास्ते पर जाने की जरूरत नहीं है । टेक्नोलॉजी का उपयोग बहुत बड़ी मात्रा में काम आ सकता है ।

माननीय अध्यक्ष जी, आतंकवाद के विषय में देश में मतभेद क्यों होना चाहिए**?** यह मानवता के लिए बहुत बड़ा संकट है और यह मानवता को चुनौती है । जो भी मानवता में विश्वास रखते हैं, उन सब को इकट्ठा होकर, इस बात को लेकर लड़ना होगा।

हम महिला सशक्तिकरण की बात करें । कांग्रेस को कई बार अच्छे अवसर मिले, पर पता नहीं क्यों, वे इतने ऊंचे हैं कि कुछ चीजें दिखती नही, छूट जाती हैं । 50 के दायके में यूनिफॉर्म सिविल कोड की चर्चा चल रही थी । कांग्रेस के पास अवसर था, लेकिन कांग्रेस उसको मिस कर गई और हिन्दू कोड बिल ला करके उन्होंने अपनी गाड़ी चला ली । उसके 35 साल बाद कांग्रेस को दूसरा अवसर मिला – शाहबानो का । माननीय सुप्रीम कोर्ट ने पूरी मदद की थी और देश में जेंडर इक्वलिटी के लिए एक अच्छा-सा वातावरण बनने की संभावना बनी थी, लेकिन उस ऊंचाई ने नीचे की चीजें देखने से मना कर दिया और वह मिस कर दिया । आज 35 साल के बाद फिर से एक बार कांग्रेस के पास मौका आया है । हम बिल लेकर आए हैं, इस देश के नारी के गौरव को बढ़ाएं ।...(व्यवधान) इसको किसी भी संप्रदाय से जोड़ने की आवश्यकता नहीं है । मैं चाहूंगा कि कांग्रेस पार्टी विशेष कर से, एक बात जो उस समय शाहबानो का मसला चल रहा था । उस सारे

कारोबार में जो मंत्री थे, उन्होंने एक टीवी इंटरव्यू में जो बात कही है, वह चौंकाने वाली है । मेरे पास उसका सत्यापन करने के लिए कोई अवसर नहीं है, मैंने जो सुना है, वह मैं बताता हूं । उस समय के कांग्रेस के मंत्रियों के मुंह से क्या बातें निकलती थीं, वह उन्होंने कही हैं । उन्होंने कहा है, जब शाहबानो का मसला चल रहा था, तब कांग्रेस के किसी मंत्री ने कहा था, "मुसलमानों के उत्थान की जिम्मेदारी कांग्रेस की नहीं है।" देखिए, गंभीर बात है । मुसलमानों के उत्थान की जिम्मेदारी कांग्रेस की नहीं है । If they want to lie in the gutter, let them be. हमारे देश के नागरिक हैं, उनको आगे ले जाने के लिए...(व्यवधान) मिल जाएगा ।...(व्यवधान) मिल जाएगा।...(व्यवधान) मैं आपको यूट्यूब की लिंक भेज दूंगा।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, मैं ज्यादा समय नहीं लेता हूं, लेकिन जो राष्ट्रपति जी ने 'गांधी 150' और 'आजादी 75' की बात कही है । हम देखते हैं कि हमारे देश में किसी न किसी कारण से अधिकारों पर ही सारी बातें केन्द्रित रहीं । हर कोई अधिकारों से जुड़ता रहा, अधिकारों की चिंता करता रहा । एक ऐसा अवसर है कि हम देश को पैराडाइम शिफ्ट करके अधिकार से कर्तव्यों की तरफ ले चलें और जनप्रतिनिधि का भी यह काम है – जनचेतना जगाना । जनप्रतिनिधि का काम है, ऐसे समय नेतृत्व करना और यह विषय ऐसा नहीं है, जो मैं कह रहा हूं । हम में से हर किसी ने सुना भी है कि कर्तव्य की क्या ताकत होती है । महात्मा गांधी कहा करते थे, "Every right carries with it a corresponding duty." लोहिया जी कहते थे, "कर्तव्य निभाते समय, नफा-नुकसान नहीं देखा जाता।" मैं यह क्वोट जरा विस्तार से बताना चाहता हूं । हो सकता है कि इसके कारण सभी लोगों को इस राह पर आने में अच्छा रहेगा ।

बहुत पुरानी बात है । जो क्वोट है – 'दुनिया को भारत की एक बड़ी सीख यह है कि यहां सबसे पहले कर्तव्य आते हैं और इन्हीं कर्तव्यों से अधिकार निकलते हैं । आज के आधुनिक भौतिकवादी विश्व में जहां हर तरफ टकराव दिखाई पड़ते हैं, वहां हर कोई अपने अधिकारों और सुविधाओं की बात करता है । शायद ही कोई कर्तव्यों की बात करता है । यही टकराव की वजह है । ये वास्तविकता है कि अधिकारों और सुविधाओं के लिए ही हम लड़ाई लड़ते हैं, लेकिन ऐसा

करने में हम अगर कर्तव्यों को भूल जाएं, तो ये अधिकार और सुविधाएं भी हमारे पास नहीं रह पाएंगी ।' मैं समझता हूं कि यह साफ-साफ दर्शन है । हम लोगों का दायित्व बनता है कि जिस महापुरुष ने यह बात कही है, उसके बाद उसको भूला दिया गया है । उस महापुरुष का पुन: स्मरण करते हुए हम इस बात को क्या आगे ले जा सकते हैं? वे महापुरुष थे, जिन्होंने 14 जुलाई, 1951 को कहा था, जब चुनाव से पहले कांग्रेस का पहला मैनिफेस्टो घोषित हो रहा था, उस घोषणा के समय यह पैराग्राफ पंडित नेहरू जी ने बोला था । मैं समझता हूं कि पंडित नेहरू जी ने जो सपना वर्ष 1951 में देखा था, उस सपने को पूरा करने के लिए, देश को कर्तव्य की राह पर ले जाने के लिए पंडित जी की उसी इच्छा को समझकर क्या हम आगे बढ़ सकते हैं? हम सब मिलकर तय करें और हम आगे चलने का प्रयास करें । हमारे देश का अनुभव ऐसा है कि जब महात्मा गांधी ने देश के नौजवानों को कहा था कि किताबें छोड़ो और आजादी के लिए चलो, तो लोग निकल पड़े । गांधी जी ने कहा था कि विदेशी छोड़ो, स्वदेशी अपनाओ, तब लोग चल पड़े थे । लाल बहादुर शास्त्री जी ने कहा था कि एक टाइम खाना छोड़ दो, अन्न का उत्पादन करो, देश ने कर दिया । मेरे जैसे छोटे व्यक्ति ने कहा कि गैस की सब्सिडी छोड़ दो, लोगों ने छोड़ दी । मतलब कि देश तैयार है, देश तैयार है । आइए, हम सब मिलकर एक नए भारत के निर्माण के लिए, आधुनिक भारत के निर्माण के लिए राजनीति की अपनी सीमाओं से भी ऊपर देश होता है, दल से बड़ा देश होता है । देश के करोड़ों लोगों की आशा, आकांक्षाएं हैं, उनको पूरा करने के लिए राष्ट्रपति जी ने जो हमें मार्गदर्शन दिया है, जो दिशा-निर्देश दिये हैं, राष्ट्रपति जी का अभिनन्दन करते हुए, उनका धन्यवाद करते हुए हम सिर्फ उनके भाषण का धन्यवाद ही नहीं, उस भाषण की स्पिरिट को जी करके राष्ट्र हित में कुछ करके सच्चे अर्थ में धन्यवाद पारित करें । इसी अपेक्षा के साथ मैं सभी इस चर्चा को समृद्ध बनाने वाले आदरणीय सदस्यों का अभिनन्दन करते हुए मेरी वाणी को विराम देता हूं । अध्यक्ष जी, आपका भी बहुत-बहुत धन्यवाद।